की दृष्टि में सबसे बड़ा काम सूली पर चढ़ना था। इन्साफ करों हुसैन (अ0) ने अकेले नही बहत्तर जानों से जिनमें छः महीने का बच्चा भी है, खुदा की राह में कुर्बानी दे दी। इसलिए कोई यहूदी, ईसाई नही कह सकता कि हुसैन (अ0) ने उनके सिद्धान्तों और विधानों का पूरा–पूरा प्रतिनिधित्व नही किया। इसलिए इस महान शहादत पर नबियों ने स्वयं शोक का हुक्म दिया (देखो हमारी उूर्द किताब ''नबियों का मातम'') इस मौक़े पर सिर्फ मियाह नबी (अध्याय–46 पेज–90) की भविष्यवाणी सुन लो, ''क्योंकि सेनाओं के नायक स्वामी खुदा के लिए उत्तर की धरती में फ़ुरात नदी के किनारे ज़बीहा (कुर्बानी) निश्चित हुई है।

हुसैन (अ0) के अतिरिक्त फ़ुरात के किनारे खुदा की राह में किसकी बलि हुई। इसी जुर्म पर जो दुनिया वालों की नज़र में जुर्म था यानी हुकूमतों (राज्यों) ने जो अपने लिए प्रभुत्व अधिकार समझ लिए थे उसका प्रतिरोध करते थे और दानवता मिटाकर मानवता का मार्गदर्शन करते थे।

ukgk

अल्लामा फ़ातिर जायसी

घर लिए फिरता है हर दिल बेवतन के वास्ते
आँख साग़र हो गई तशना दहन के वास्ते

शाम जाते खूब रोए लाशे सरवर पर हरम
एक चादर भी न थी बाक़ी कफन के वास्ते

उन सा बाग़ी बढ़ के होगा कौन ज़ेरे आसमाँ
लाए जो तीशा पयम्बर के चमन के वास्ते

इसको कहते हैं मुसीबत इसको कहते हैं मलाल
आसमाँ रोया लहू तशना दहन के वास्ते

कर चुका तजवीज़ मुद्दत से सिपहरे नीलफाम
तीर का काँटा सग़ीरे गुलबदन के वास्ते

सर की चादर भी न छिन जाती तो क्या करते हरम
मुँह छिपाते या उठा रखते कफन के वास्ते

ख़ित्त–ए–यसरिब से आकर कर्बला में हो गई
दुख़्तरे मुशकिल कुशा बन्दे रसन के वास्ते

ले गए ऑदा तो ले जाएँ लिबासे शाहे दीं
चादरे ततहीर बाक़ी है कफन के वास्ते

गर्म थी खाक इसलिए उठकर निगाहे यास ने
छान डाला चर्ख़ असग़र के कफन के वास्ते

ये क़यामत तक न निकलेगा कभी ए आसमाँ
फातिमा का चाँद आया था गहन के वास्ते

असरे आशूरा को लाईं आँधियाँ उठकर सियाह
भाई की ख़ातिर कफन चादर बहन के वास्ते

लाई थी बच्चे को माँ एक दिन पए नज़रे हुसैन
जब कभी रोए थे बचपन में हिरन के वास्ते